

सम्पादकीय

खरीफ की खेती मुख्यतया वर्षा जल पर निर्भर रहती है। गत दो-तीन वर्षों से किसान भाई सूखे की मार झेल रहे हैं। खेती-बारी में निराशा पनप रही है, इस गंभीर मुद्दे पर हमें विचार करना होगा। कम पानी चाहने वाली, सूखा प्रतिरोधी प्रजातियों का चुनाव करना होगा, कम लागत वाली तकनीक अपनानी होगी और प्रति इकाई उत्पादकता बढ़ानी पड़ेगी। कृषि मजदूरों की समय पर उपलब्धता न होना तथा उनकी बढ़ती हुई मजदूरी भी एक भारी समस्या बनी हुई है ऐसे में हमें यंत्रीकरण को अपनाकर वैज्ञानिक ढंग से खेती करनी होगी। यंत्रीकरण से खेती की लागत कम होगी, मजदूरों की समस्या से निजात मिलेगी, उत्पादकता बढ़ेगी तथा खेती में दिलचस्पी बढ़ेगी। हमारे खेत छोटे-छोटे हो रहे हैं। छोटी जोत के लिये भी कृषि यन्त्र उपलब्ध हैं, जिसका उपयोग फसलों की बुआई, रोपाई, खरपतवार की निराई-गुड़ाई, रसायनों के छिड़काव और कटाई के लिए कर सकते हैं। फसल विविधिकरण पर भी हमें

विचार करना होगा। उपरवार वाले खेत में जहाँ पानी नहीं रुकता है धान की जगह पर सोयाबीन, कम अवधि का अरहर, तिल, मक्का ज्वार और बाजरा की खेती करनी होगी। आमदनी बढ़ाने के लिए हमें इन फसलों के साथ इन्टर क्रॉपिंग(सहफसली /अंतरवर्ती पद्धति) की खेती करनी होगी, जहाँ पानी रुकता हो तथा हम 1-2 पानी देने की स्थिति में हो वहाँ 125-130 दिनों में तैयार होने वाली संकर धान की खेती करने से उत्पादकता बढ़ेगी तथा अच्छा लाभ मिलेगा। वैज्ञानिक ढंग से धान की सीधी बुआई करके लागत में कमी करते हुए अच्छी उपज ली जा सकती है। खेती के साथ-साथ छोटी जोत/भूमिहीन कृषक अपने घर पर बहुत मामूली लागत से मशरूम का उत्पादन, बैक्यार्ड पोल्ट्री (घर के पिछवाड़े देशी मुर्गी पालन), 1-2 गाय रखकर दुग्धपालन, बकरी पालन करके घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। घर के सामने या पीछे खाली जमीन में सब्जी

वाटिका बनाकर अपनी घरेलू आवश्यकता कुछ हद तक पूरी की जा सकती है। खेती के तौर-तरीकों में कुछ बदलाव कर हम अपनी सकारात्मक सोच रख करके खेती को लाभ दायक बना सकते हैं।

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र, कृषक भाइयों को तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ उपलब्ध कृषि यंत्रों, पौली हाउस के सब्जी के पौधों तथा परिवर्तन किसान क्लब द्वारा उचित मूल्य पर उत्तम गुणवत्ता वाले बीज, उर्वरक एवं कीटनाशक दवाओं को उपलब्ध कराने में प्रयासशील है। आशा है कि परिवर्तन कृषि सन्देश का यह खरीफ विशेषांक किसान भाइयों, तथा कृषि से जुड़े उद्यमियों, प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी साबित होगा।

डॉ अमरनाथ तिवारी, कृषि सलाहकार

फसलों की बेड प्लांटिंग (ऊँची उठी क्यारी)/मेंढ पर बुआई करें -

इस विधि में बेड(पट्टी)की ऊंचाई 15-20 से० मी० तथा पट्टी की चौड़ाई 90 से० मी० रखते हैं। एक पट्टी पर फसल के अनुसार 2-3 पक्तियां रखते हैं। इस पद्धति से धान, मक्का, अरहर, मूँग, उर्द, सोयाबीन, चना तथा सब्जियों में भिन्डी, गाजर, मूली, गोभी, आदि की खेती सफलता पूर्वक की जा सकती है। इस पद्धति से निम्न लाभ हैं -

- समतल भूमि में बुआई की अपेक्षा ऊँची उठ क्यारी

विधि में 30% पानी की बचत होती है तथा 20% अधिक उपज मिलती है।

- वर्षा का अधिक पानी नाली से बह जाता है जिससे फसल की उपज का नुकसान नहीं होता है उर्वरक उपयोग क्षमता बढ़ जाती है।
- वर्षा जल की कमी की स्थिति में समतल विधि की अपेक्षा इस विधि में 4.5% अधिक नमी रहती है।
- कम वर्षा की स्थिति में दोनों तरफ से नालियों को

बंद कर देते हैं जिससे नमी बनी रहती है।

- दो पट्टी के बीच नालियों में अंतरवर्ती फसलें सफलता पूर्वक उगाई जा सकती हैं।
- रबी 2018 में ऊँची उठी क्यारी (बेड प्लांटिंग) में गेहू का प्रदर्शन किया गया, इसमें फसल का जमाव तथा वृद्धि अच्छी थी, नाली में गरमा सब्जी की खेती अथवा मेंथा की बुआई करके अच्छा लाभ कमाया जा सकता है।

जीरो टिलेज मशीन से गेंहू की खेती में किसानों की दिलचस्पी बढ़ी

खेती में बढ़ती लागत को कम करने एवं समय से गेंहू की बुआई संपन्न करने की दिशा में जीरो टिलेज के अंतर्गत खेती का महत्व बढ़ गया है। इस विधि में धान की कटाई के तुरंत बाद बिना जुताई के जीरो टिलेज मशीन द्वारा मशीन में ही बीज एवं उर्वरक रखकर बुआई करते हैं। यह मशीन खेत में समान दूरी पर चीरा लगाती जाती है तथा बीज एवं उर्वरक समान रूप से उचित गहराई पर गिरते जाते हैं। इस विधि से बुआई करने पर खेत की जुताई एवं तैयारी के खर्च में

को दिखाया गया, किसानों ने दिलचस्पी से देखा तथा अपने से भरे प्रश्न किये, किसान सभी संतुष्ट थे तथा मशीन खरीदने के लिए उस पर अनुदान दिलाने की बात कही।

गेंहू के अलावा जीरो टिल मशीन से दलहनी- तिलहनी फसलों की भी बुआई करके लागत कम करते हुए अच्छी उपज ली जा सकती है। परिवर्तन परिसर में



जीरो टिल मशीन से बोये हुए गेंहू- प्रदर्शन का अवलोकन करते हुए किसान

लगभग 150-200/रु०/कट्टा की बचत हो जाती है और सिंचाई के घंटों में कमी आती है। बनरी खरपतवार की गहनता में कमी आती है। इस विधि से खेती करने पर पारंपरिक विधि के बराबर उपज मिल जाती है साथ ही साथ खेत की तैयारी का खर्च बच जाता है। इस विधि से जीरादेई तथा आंदर प्रखंड के 105 किसानों के खेतों पर वर्ष 2017-18 में जीरो टिलेज विधि से गेंहू की बुआई कराई गयी थी। किसानों को प्रतिक्रियाओं को जानने तथा किसानों के जिज्ञासा भरे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए गत 27 मार्च को नारायणपुर तथा 28 मार्च को बंगरा उज्जैन में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। किसानों को खेतों पर ले जाकर फसलों

मसूर की बुआई जीरो टिल मशीन से रबी 2018 में की गयी तथा इसका तुलनात्मक अध्ययन किसान की छिटकवा विधि से किया गया। जीरो टिल मशीन से बोई गयी फसल में समान रूप से जमाव देखा गया। जीरो टिल विधि में खरपतवारों का प्रकोप छिटकवा के मुकाबले कम था। मशीन से ही डी ए पी 2 किलो /कट्टा के हिसाब से डाला गया। 250 ग्राम सल्फर/कट्टा के हिसाब से भी खेत में डाला गया। छिटकवा के मुकाबले जीरो टिल विधि में ज्यादा उपज होने की उम्मीद है।



जीरो टिल मशीन से मसूर की बुआई

परिवर्तन परिसर में किसान मेले का आयोजन

दिनांक 09 मार्च 2018 को परिवर्तन परिसर में किसान मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में आसपास के गांवों से लगभग 400 किसानों ने भाग लिया। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा अपने-अपने स्टाल लगाकर उन्नतशील किस्म के बीजों, कीटनाशकों - फफूंदनाशकों, कृषि यंत्रों एवं विभिन्न पोषक तत्वों का प्रदर्शन किया गया। छोटे-छोटे जोत वाले किसानों के लिए फसल कटाई की रीपर एवं बाइंडर मशीन, सिंचाई के लिए पम्पसेट, डेलेवरी पाइप, रसायनों के छिड़काव के लिये स्प्रेयर, औषधीय पौधे, गरमा सब्जी के पौधे, पूसा के पपीते के पौधे आकर्षण के केंद्र रहे। किसानों को लीफलेट एवं कृषि साहित्य से भी लाभान्वित किया गया। इस मेले के अवसर पर परिवर्तन सभागार में एक कृषि गोष्ठी आयोजित की गयी, इस गोष्ठी में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, पूर्वी भाग, पटना के वरिष्ठ वैज्ञानिक- डॉ संजीव कुमार,

ने छोटे जोत वाले कृषकों के लिए समेकित कृषि प्रणाली एवं उद्यानविद डॉ कोले ने आम की फसल के लिए पौध रक्षा उपायों की जानकारी दी। सीरियल सिस्टम इनिशिएटिव फॉर साउथ एशिया, गोरखपुर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ प्रभात कुमार धान -गेंहू, फसल चक्र के प्रभावी बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। कृषि विज्ञान केंद्र, सिवान के प्रोग्राम कोआर्डिनेटर डॉ आर के मंडल, कृषि विभाग, सिवान के कोआर्डिनेटर श्री मृतुञ्जय कुमार सिंह ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। कृषि विभाग द्वारा कृषि यंत्रों की खरीदारी पर सरकार द्वारा दी जा रही सुविधाओं को भी विस्तृत रूप से बताया गया। पाइनीयर कंपनी के श्री मनीष जी हाइब्रिड धान के बारे में तथा बायोस्टेड कंपनी के श्री अखिलेश कुमार ने बायोजाईम- जैविक उत्पाद के उपयोग के बारे में बताया।



किसान मेले में लगाये गए स्टाल

फसल नियोजन

वर्षा जल की कमी तथा अनिश्चितता के परिपेक्ष्य में हमें फसलों का नियोजन करना पड़ेगा। अपनी खेत की दशा एवं सिंचाई के साधन को ध्यान में रखकर फसलों का चुनाव करना होगा। उपरवार वाली भूमि जहां पानी नहीं रुकता है, वहाँ धान की जगह पर दलहनी- तिलहनी फसलों का चुनाव करना होगा।

खरीफ में सोयाबीन, अरहर (कम दिन का), तिलकी खेती लाभदायक होगी। एक साल में अरहर/सोयाबीन -गेंहू फसल पद्धति अपनानी होगी | इन फसल पद्धतियों की उत्पादन तकनीक नीचे दी गयी है।

(अ)सोयाबीन-गेंहू-मूँग फसल पद्धति की उत्पादन तकनीक (एक साल में तीन फसल)

कारक	सोयाबीन	गेंहू	मूँग
भूमि	बलुई-दोमट	बलुई-दोमट	बलुई-दोमट
बुआई विधि	कतार से कतार 30 से. मी.	20 से. मी.	30 से. मी.
बुआई का समय	25 जून से 15 जुलाई के मध्य	10 नवम्बर से 25 नवम्बर	अप्रैल का तृतीय सप्ताह
बीज दर एवं उपचार	30 किलो /एकड़ अथवा एक किलो/कट्टा	40 किलो/एकड़ अथवा 1.5 किलो/ कट्टा	5-6 किलो/एकड़ अथवा 225-250 ग्राम/ कट्टा
प्रजाति	पूसा 9712 अथवा जे एस 93-05 (90-95दिन अवधि),	एच डी 2967, एच डी 2733 एवं एच डी 2824	पूसा विशाल, पी डी एम 11, एस एम एल 334, सम्राट
पोषक तत्व प्रबंधन	डी ए पी 2 किलो / कट्टा, म्यूरेट आफ पोटाश 1.5 किलो / कट्टा एवं सल्फर 250ग्राम/ कट्टा -बुआई के समय डालें	बुआई के समय- डी ए पी 2.5 किलो/ कट्टा, मुरेट ऑफ़ पोटाश 1.5किलो/कट्टा खड़ी फसल में -यूरिया 3 किलो/कट्टा- दो किश्त में क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय सिंचाई के बाद	डी ए पी 2 किलो / कट्टा बुआई के समय प्रयोग करें
खरपतवार प्रबंधन	पेंडीमेथालिन 30% ड सी (1250 मि. ली./ एकड़ बुआई के दूसरे दिन 150-200 लि पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे अथवा इमेज़थाप्ये 10% एस एल(पासपोर्ट) (300 मि. ली. एकड़)का 150-200ली 0 पानी में घोल बनाकर बुआई के 10-12 दिन दिन बाद छिड़काव + आवश्यकतानुसार एक निराई	सल्फोसल्फुरान+मेत्सल्फुरान(टोटल)की 16ग्राम मात्रा 120-150ली0 पानी में घोल बनाकर बुआई के 28-30 दिन बाद छिड़काव करें	पेंडीमेथालिन 30% ड सी (1250 मि. ली.बुआई के दूसरे दिन 150-200 ली0 पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें
सिंचाई प्रबंधन	वर्षा के अभाव में एक सिंचाई दाना बनते समय	ताजमूल अवस्था,कल्ले निकलते समय एवं -दुग्धावस्था पर	पहली-बुआई के 20 दिन बाद दूसरी-बुआई के 30-35 दिन बाद
कटाई	अक्टूबर का द्वितीय पखवाड़ा	अप्रैल का दूसरा सप्ताह	जून के तीसरे सप्ताह
उपज	5-6 कु0/एकड़ (18-20कि0/कट्टा)	16 18 कु/एकड़ (60-65कि0/कट्टा)	2.5- 3 कुं0/एकड़ (9-10कि0 /कट्टा)

(ब) अरहर-गेहूँ-मूँग उत्पादन तकनीक (एक साल में तीन फसल)

कारक	अरहर	गेहूँ	मूँग
भूमि	बलुई-दोमट	बलुई-दोमट	बलुई-दोमट
बुआई विधि	60-75 से. मी.	20 से. मी.	30 से. मी.
बुआई का समय	20-25 जून	10 नवम्बर से 25 नवम्बर	अप्रैल का तीसरा सप्ताह
बीज दर एवं उपचार	5-6 किलो/एकड़ अथवा 250ग्राम/कट्टा	40 किलो/एकड़ अथवा 1.5किलो/कट्टा	5-6किलो/एकड़ अथवा 225-250 ग्राम/कट्टा
प्रजाति	उपास 120, पूसा 992, आई सी पी यल 88039	एच डी 2967, एच डी 2733 एवं एच डी 2824	पूसा विशाल, पी डी एम 11, एस एम एल 334, सम्राट
पोषक तत्व प्रबंधन	डी ए पी 2 किलो/कट्टा एवं म्युरेट आफ पोटाश 1.5 किलो / कट्टा एवं सल्फर 250ग्राम/कट्टा-बुआई के समय	डी ए पी 2.5 किलो / कट्टा बुआई के समय ; मुरेट ऑफ़ पोटाश 1.5किलो /कट्टा बुआई के समय यूरिया- 3किलो/कट्टा- दो किशत में क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय सिंचाई के बाद	डी ए पी 2 किलो / कट्टा बुआई के समय प्रयोग करे
खरपतवार प्रबंधन	पेंडीमेथालिन 30% डी सी (1250 मि. ली. बुआई के दूसरे दिन 150-200 ली0 पानी में घोल बनाकर छिड़काव + आवश्यकतानुसार एक निराई	सल्फोसल्फुरान+मेत्सल्फुरान(टोटल)की 16ग्राम मात्रा 120-150ली0 पानी में घोल बनाकर बुआई के 28-30 दिन बाद छिड़काव करें	पेंडीमेथेलिन 125 मी0 ली0 /एकड़ बुआई के दूसरे दिन बाद 150-200 ली 0 पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें
सिंचाई प्रबंधन	नमी के आभाव में एक सिंचाई दाना भरते समय	प्रथम- ताजमूल अवस्था, कल्ले निकलते समय एवं -दुग्धावस्था पर	पहली-बुआई के 20 दिन बाद दूसरी-बुआई के 30-35 दिन बाद
कटाई	अक्टूबर का दूसरा पखवाड़ा	अप्रैल का दूसरा सप्ताह	जून के तीसरे सप्ताह
उपज	3-4कु0/एकड़ (10-15कि0/कट्टा)	16-18 कु 0/एकड़ (60-65कि0/कट्टा)	2.5-3 कु0/एकड़ (9-10कि0/कट्टा)

(स)खरीफ में अंतरवर्ती/सहफसली (इन्टरक्रॉपिंग) खेती के प्रमुख बिंदु

अंतरवर्ती फसलें	बुआई की विधि
अरहर+सोयाबीन(1:2)	अरहर की दो पंक्तियों के बीच दो कतार सोयाबीन
अरहर+तिल(1:2)	- तदैव -
अरहर +ज्वार (1:2)	-तदैव -
अरहर+मक्का (1:2)	-तदैव -
मक्का+सोयाबीन (1:1)	मक्का की दो कतार के बीच एक कतार सोयाबीन की लगायें
उड़द /मूँग +तिल(3:1)	उड़द / मूँग की तीन कतारों के बाद एक कतार तिल लगायें

नोट -1 अरहर के साथ अंतरवर्ती खेती (इन्टर क्रॉपिंग) - ऊँची उठी क्यारी पर अरहर की बुआई 90 से. मी. की दूरी पर करें अरहर की दो कतार।

(90 से. मी.) के बीच में दो कतार सोयाबीन अथवा दो कतार ज्वार अथवा दो कतार तिल अपनी आवश्यकतानुसार बुआई करें। मूँग के साथ तिल की बुआई के लिए मूँग की तीन कतार के बाद हर चौथी कतार पर तिल की बुआई करें।

2-अरहर की लम्बी अवधि की प्रजाति नरेन्द्र अरहर-2 अथवा बहार अथवा पूसा 9 की बुआई करें, ज्वार के साथ अरहर लगाने से अरहर में उकटारोग नहीं लगता है।

3- मूँग की पन्त मूँग ५, पन्त मूँग ६ अथवा एच यू एम् 16 अथवा सुजाता (डब्लू यू बी 109) की बुआई करें, तिल की प्रजाति कृष्णा (85-90 दिन) को लगायें।

खरीफ की फसल में खरपतवार प्रबंधन

फसल	खरपतवारनाशक	मात्रा/एकड़	प्रयोग की विधि
धान (सीधी बुआई)	पेनडीमेथेलिन 30% ड सी	1250 मि. ली.	बुआई के दूसरे-तीसरे दिन बाद 150- 200 ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से खरपतवारों का जमाव नहीं होता। इसके पश्चात एक निराई- बुआई के 20-25 दिन बाद करें
धान (रोपाई)	विसपायरीबैक सोडियम (नोमनीगोल्ड)	80-100 मि. लि.	रोपाई के 20-25 दिन बाद 100-120 ली0 पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें
मक्का	ऐट्राजीन 50% WP	400ग्राम	सकरी तथा चौड़ी पत्तीके खरपतवारों को नष्ट करने के लिए बुआई के 12-15 दिन पर 100-120 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें
मक्का+अरहर	पेनडीमेथेलिन 30% EC	1250 मि. ली.	बुआई के दूसरे-तीसरे दिन बाद 150- 200 ली0 पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से खरपतवारों का जमाव नहीं होता
अरहर/मूँग / उड़द/तिल	-तदैव -	तदैव	-तदैव-

धान की खेती के प्रभावी बिंदु -

- उपरवार वाले खेत में जहाँ पानी नहीं टिकता हो तथा अपने पास सिंचाई के साधन न हों तो धान कि कम अवधि वाली प्रजाति नरेन्द्र 97 अथवा पी एन आर 381 की बुआई करें, यह प्रजाति 105-110 दिन में तैयार हो जाती है। जिस खेत में पानी टिकता हो तथा 1-2 सिंचाई की व्यवस्था हो, वहाँ राजेंद्र स्वेता (135-140 दिन) की रोपाई करें।
- धान की सीधी बुआई का कार्य 15-20 जून के भीतर अर्थात वर्षा प्रारंभ होने के 15-20 दिन पहले समाप्त कर लें, बुआई के समय खेत में अच्छी नमी रहनी चाहिए। बुआई के दूसरे दिन पेंडीमेथेलिन 30% इ सी का 1250 मि. लि. प्रति एकड़ के हिसाब से 150-200 ली० पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए, इससे 25-30 दिन तक खरपतवार नहीं जमेगा आवश्यकतानुसार एक निराई की जा सकती है।
- अच्छी उपज के लिए रोपित धान के पौधों की प्रति वर्ग मीटर संख्या 45-50 होनी चाहिए।
- मध्यम अवधि की प्रजातियों की रोपाई हर हालत में 15 जुलाई तक संपन्न कर लेनी चाहिए अन्यथा विलम्ब करने पर 500-600 ग्राम/दिन/कट्टा उपज कम होती जाती है।
- सीधी धान की बुआई की फसल को बुआई के प्रथम 20 दिन बाद तक खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। रोपित धान की फसल को रोपाई के प्रथम 25-30 दिन तक खरपतवार मुक्त रखना चाहिए।
- वर्षा जल के अभाव में सम्वेदनशील अवस्थाओं पर अर्थात धान में किल्ले निकलते समय, गाभा फूटते समय एवं दाना भरते समय नमी बनाए रखें।
- कीड़ों एवं बीमारी लगने पर संस्तुत कीटनाशकों एवं फफुन्द नाशकों का छिड़काव करें।

मक्का की खेती के प्रभावी बिंदु -

- संकर मक्का की शक्तिमान 1,2,3 एवं 4, पायनीयर 3377 आदि की बुआई करें।
- बुआई 15 जून से 15 जुलाई तक संपन्न कर लें।
- बुआई 60 से 100 मी० की दूरी पर कतार में करें, पौध से पौध कि दूरी 20 से 100 मी० रखें, 8 पौध/वर्गमीटर रखने पर अच्छी पैदावार मिलती है।
- बुआई के 10-15 दिन के अन्दर ऐत्रजिन 400 ग्राम/एकड़ के हिसाब से

150-200 ली० पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं।

- मोचा बनने तथा दाना भरते समय खेत में नमी बनाये रखें।

दलहनी फसलों में प्रभावी बिंदु

- अरहर की फसल में पौध संख्या 8-10 प्रति वर्गमीटर, मूँग /उड़द की पौध संख्या 33-40 प्रति वर्गमीटर रखनी चाहिए इससे अच्छी पैदावार मिलती है।
- अरहर की फसल को बुआई के 14 दिन से लेकर 60 दिन तक खरपतवार मुक्त रखें।
- अरहर में शाखा बनते समय एवं दाना भरते समय खेत में नमी बनाये रखें।

क्या आप जानते हैं -

- हरी प्याज में विटामिन A, B, C एवं K होता है। इसके अतिरिक्त यह कापर, मैग्नीसियम, मैगनीज, क्रोमियम, फॉस्फोरस, पोटैशियम, सल्फर, तथा रेशा का अच्छा स्रोत है। सल्फर की अधिक मात्रा होने के कारण यह उच्च रक्त चाप को नियंत्रित करता है। क्रोमियम के कारण मधुमेह भी नियंत्रित रहती है प्याज का सलाद के रूप में प्रयोग अधिक लाभदायक है।
- बोरोन तत्व की कमी से आम, लीची व निम्बू के फल फटने लगते हैं। इसके लिए दो ग्राम बोरोन /लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
- अब यूरिया दो किलो, पांच किलो, दस किलो और 25 किलो के पाकेट में उपलब्ध होगा, दो किलो पाकेट पर रु 1.50/, 5 किलो के पाकेट पर रु 2.25/, 10 किलो के पाकेट पर रु 3.50/ 25 किलो के पाकेट पर रु 5/ अधिक चार्ज देना होगा इससे फायदा यह होगा कि छोटे- छोटे किसान पूरी बोरी न लेकर अपनी आवश्यकतानुसार छोटे पाकेट लेकर अपना काम चलाएंगे।
- फसल अवशेषों को खेत में जलाने से मिट्टी की 1 से. मी. परत का तापमान 33.8-42.2 डिग्री सेंटीग्रेड हो जाता है जिससे लाभदायक बैक्टीरिया व फंगस नष्ट हो जाते हैं।
- एक किलो चावल पैदा करने के लिए 3500-4000 लीटर पानी की आवश्यकता होती है।
- एक टन गन्ना पैदा करने के लिए 2.5 लाख ली० पानी की आवश्यकता होती है।

मै इन्द्रासन राम ग्राम- मियां के भटकन का निवासी हूँ तथा परिवर्तन से जुड़ा हूँ। सब्जी की खेती परिवर्तन से पौधा लेकर करता हूँ। इस साल गेट के चौकीदार से लेकर हमने नेनुआ, लौकी, प्याज तथा बैंगन का पौधा लगाया। चारों में बैंगन, नेनुआ तथा प्याज बहुत अच्छा रहा। लौकी की फसल ठीक नहीं हुई। आगे हमें अगेती गोभी, बरसाती प्याजी, मिर्च और टमाटर की पौध हम परिवर्तन से ले जायेंगे। हमें परिवर्तन के द्वारा साल भर की सब्जी का प्लान मिल जाय तो हमें लाभ होगा।



इन्द्रासन राम, मियां के भटकन

मै मियां के भटकन तथा खेम भटकन के बीच में मुर्गी पालन करता हूँ। वहीं पर 10 धूर खाली जमीन थी। लोगों ने बताया कि परिवर्तन में कातिकी प्याज का पौधा मिल रहा है। मैं फिर परिवर्तन से 5 धूर के लिए प्याज का पौधा लाया तथा अपनी जमीन में लगाया, प्याज एक कुंतल पांच धूर में हमें मिला, टमाटर भी अच्छा फल दिया। जो भी पौधा सब्जी का मिलेगा हम लगाएंगे।



शाहरून कुरेशी, मियां के भटकन

मेरा घर खेम भटकन है। मैं परिवर्तन से 4 साल से जुड़ा हुआ हूँ। हर सीजन में जो बीज परिवर्तन में आता है, मैं खरीदकर अपने खेत में लगाता हूँ और मुझे काफी फायदा हो रहा है। मैं जब भी कोई मीटिंग खेती का होता है लगातार जाता हूँ।



परिवर्तन के द्वारा जीरो टिलेज विधि से गेहू का बुवाई हो रहा है। मेरे गाँव में चार- पांच लोग बुवाई कराये उसमें मैं भी था। गाँव के लोग

बोल रहे थे की सब खेत परती रह जायेगा लेकिन मैं बिस्वास रखा और मुझे काफी अच्छा पैदवार मिला। गाँव में किसान चौपाल लगता है उसमें खर पतवार के बारे में भी सभी जानकारी मिल जाती है और मेरा एक सुझाव यह है कि परिवर्तन में अक्टूबर में सरसों का बीज मिल जाये तो हमलोग सरसों की खेती समय से कर लेंगे।

सीता राम यादव खेम भटकन

मै ज्ञानचन्द सिंह ग्राम उजैन बंगरा का निवासी हूँ। हम पहले छिटकाव विधि से गेहू का बुवाई करते थे। कई बार आंदर ब्लाक से गेहू का बीज मिला। जीरो टिलेज मशीन से बुवाई करने के लिए लेकिन हमारे क्षेत्र में मशीन नहीं थी। फिर हमको पता चला की परिवर्तन में जिरो टिलेज मशीन आया है। बुवाई चल रही है तो मैं परिवर्तन गया और बात किया की मेरा भी बुवाई जीरो टिलेज से करनी है तो मशीन मिला और बुवाई भी हो गया। खास बात यह है की इस विधि से खाद पौधे को डैरेक्ट मिल जाता है जिसे पौधा काफी हरा भरा था। सिचाई में पानी का बचत हुआ, छिटकाव विधि से काफी बचत है।



ज्ञानचन्द सिंह, उजैन बंगरा

नरेन्द्रपुर काली माई के स्थान पर जाता था। वहीं पर मुन्ना सिंह, फनीस बाबू के खेत में देखा था की धान का डंठल लगा है और गेहू का बुवाई मशीन द्वारा चल रहा है फिर मैंने सोचा की बिना जुताई के गेहू कैसे होगा। फिर दो महीने के बाद एक दम से गेहू जमकर बढ़ रहा था तो मैंने भी सोचा की अगली बार हम भी अपने गाँव में लोगों से कहेंगे कि हमलोग भी मशीन से गेहू की बुवाई करें जिसमें बिना जोते हुए गेहू की बुवाई हो जाती है और जुताई का खर्च बच जाता है।



राम अवध यादव, नारायण पुर

आवश्यक सूचना

- 1- परिवर्तन में जीरो टिल मशीन, रेज्ड वेड प्लान्टर, रिज प्लान्टर तथा मिट्टी पलटने वाला हल उपलब्ध है। किसान भाई इसे ले जाकर अपना कार्य कर सकते हैं।
- 2- पौली हाउस में अगेती गोभी, बरसाती प्याज, संकर बैंगन, संकर टमाटर, संकर मिर्च के पौधे तैयार किये जाते हैं। किसान भाई समय से आकर इन पौधों को लेकर रोपाई संपन्न करें।
- 3- परिवर्तन किसान क्लब की सदस्यता शुल्क 100/रु वार्षिक है। शुल्क के साथ पासपोर्ट साइज का फोटो जमा कर सदस्य बनें।

सहयोगी संस्थाएं

- सीरियल सिस्टम इनिशिएटिव फार साउथ एशिया, पटना
- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, पूसा, समस्तीपुर
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, रिसर्च काम्प्लेक्स, पूर्वी क्षेत्र, पटना
- कृषि एवं कृषि से जुड़े सम्बंधित विभाग, सिवान



समेकित ग्रामीण समुदाय विकास
नरेन्द्रपुर जीरादेई सिवान

संपर्क सूत्र-

डॉ अमरनाथ तिवारी

कृषि सलाहकार, परिवर्तन, नरेन्द्रपुर

+ 91 7759863367

amarnath@parivartanbihar.org